

---

# Shri Santadasa Ashtakam

श्रीसन्तदासाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Santadasa Ashtakam

File name : santadAsAShTakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, nimbArkAchArya, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : Lakshmi Mishra

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 7, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 7, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Santadasa Ashtakam

---

### श्रीसन्तदासाष्टकम्

---



(श्री लक्ष्मीमिश्रविरचितं)

शरदिन्दु-कुन्द-तुषार-हार-पवीर-पारदसुन्दरं

जप-मालिका-मणि-पद्मपाणिमशेषलोकलितैषिणम् ।

कुलमौलिमादिगुरुं जटामुकुटादिभूषणभूषितं

प्रणमामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शितविष्णुकम् ॥ १ ॥

शुभनिम्बभानुपथानुगं हरिभक्तिपरायणं शिवं

बहुलानुरागनिवासरासविलासदर्शनरागिणम् ।

रमणीय वेषुनिनाद-वादविवाद-संश्रवणे रुचिम्,

प्रणमामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शितविष्णुकम् ॥ २ ॥

शिवब्रह्मविष्णुप्रपूजकं निजभक्तिरक्षितसाधकं

नवसिद्धयोगीमुनीन्द्रवन्दितनिम्ब भानुकुलोद्भवम् ।

करुणालयं छि उदारता करशान्तदान्त-सुमन्दिरं

प्रणमामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शित विष्णुवम् ॥ ३ ॥

सकलां विधाय स्वसम्पदं मुरारिपादसमाश्रितं

जगतां स्वकीयविशुद्धमार्गप्रदर्शकं हरिसेवकम् ।

कलिकल्मषघ्नमशेषसद्गुणसागरं नरनागरं

प्रणमामि सम्प्रति-“सन्तदास”मिडैव दर्शित विष्णुकम् ॥ ४ ॥

सनकादिकैर्मुनिभिः प्रदर्शितपद्मतौ पथिकं स्थिरं

जगतीतलैक-सुवाटिका लृटिकञ्जकुललषटपदम् ।

वृषभानुजाप्रियपद्मरेणुसितं छितं सुललाटकं

प्रणमामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शितविष्णुकम् ॥ ५ ॥

यमुनातरङ्गसमाकुले पुलिने विहारपरायणं

निजधर्मकर्मपथे स्थितं प्रथितं विचारप्रवाहने ।

सततं सुसेवितसज्जनं जनतां सुधीर-प्रचारकं

प्रणामामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शित विष्णुकम् ॥ ६ ॥

गुरुपादपद्मरजःकण्ठैर्विमलीकृतं सुललाटकं

मुनिमण्डलीनदराजडंसमसङ्ख्यशिष्यसुसेवितम् ।

उरिनामपावनसागरं ब्रजधूलिभूषणभूषितं

प्रणामामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शित विष्णुकम् ॥ ७ ॥

निजसम्प्रदायसमुन्नतौ यतमानमामराणं परं

जगतीतलैकसुधाकरं निजभक्तजनैक सुरक्षकम् ।

कलिकल्मषोत्कटतापनं भवसागरात् परित्राणं

प्रणामामि सम्प्रति “सन्तदास”मिडैव दर्शितविष्णुकम् ॥ ८ ॥

भक्तिमान् यः पठेन्नित्यं सन्तदासाष्टकं शुभम् ।

औडिकं छि सुभं भुङ्क्वायान्ते भोक्षमवाप्नुयात् ॥


भक्तिदं वैष्णवाणां य मुमुक्षूणां य भोक्षदम् ।

सन्तदासाष्टकं श्रुत्वा नरः सद्गतिमाप्नुयात् ॥


एति श्रीलक्ष्मीमिश्रविरचितं श्रीसन्तदासाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor

---

——  
*Shri Santadasa Ashtakam*

pdf was typeset on January 7, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

